सभोपदेशक 7:20–22 (ERV-HI)

वास्तव में, धरती पर ऐसा कोई धर्मी नहीं है
जो हमेशा सही काम करे और कभी पाप न करे।
लोगों की हर बातों को दिल पर मत लो,
ऐसा न हो कि तुम अपने सेवक को तुम्हारे खिलाफ बोलते सुनो। क्योंकि तुम्हें भी अपने मन में मालूम है
कि तुमने भी कई बार दूसरों को कोसा है।

बुद्धिमानों के लिए एक सलाह

नीतिवचन और सभोपदेशक की पुस्तकें रोज़मर्रा के जीवन के लिए अद्भुत ज्ञान से भरी हैं — न कि केवल आत्मिक बातों के लिए। ये दोनों पुस्तकें राजा सुलेमान ने लिखी थीं, जिन्हें परमेश्वर ने विशेष ज्ञान से आशीषित किया था। आज हम सभोपदेशक 7:20–22 से एक महत्वपूर्ण पाठ सीखते हैं: दूसरों की बातों से उत्पन्न अनावश्यक दर्द से अपने दिल की रक्षा कैसे करें।

गलत समझे जाने या बुरे शब्दों का सामना करना

जब हम लोगों के साथ रहते हैं — चाहे परिवार, मित्र, सहकर्मी या

मसीही भाई-बहन — तो आलोचना, चुगली या कठोर शब्दों का सामना होना तय है। चाहे हम कितने भी अच्छे बनने की कोशिश करें, लोग बातें करेंगे। कई बार ये बातें अनुचित, गलत या बहुत दुखदायक होती हैं।

पर सुलेमान की सलाह है: हर बात को दिल पर मत लो।

क्यों? क्योंकि हर बात पर प्रतिक्रिया देना आवश्यक नहीं होता। कई बातें ऐसी होती हैं, जिन्हें अनदेखा करना ही बेहतर होता है — आपकी आत्मिक शांति के लिए।

जिज्ञासा का जाल

जब हमें पता चलता है कि किसी ने हमारे बारे में बुरा कहा, तो हम तुरंत जानना चाहते हैं:

किसने कहा?
क्यों कहा?
किससे सुना?
कहाँ से यह बात फैली?

इस तरह हम शक, पूछताछ और कटुता के रास्ते पर चल पड़ते हैं। यह हमें अपनों से — जीवनसाथी, बच्चों, भाई-बहनों, या कलीसिया के

लोगों से — दूर कर सकता है।

सुलेमान चेतावनी देते हैं:

“यदि तुम हर बात जानने की कोशिश करोगे,
तो शायद तुम अपने ही नौकर को तुम्हें कोसते हुए सुन लोगे।” (सभोपदेशक 7:21)

परिणाम? अनावश्यक दिल का टूटना।

अपने दोषों को न भूलें

गुस्से या निर्णय में आने से पहले एक सवाल सोचें:

क्या आपने कभी किसी के बारे में नकारात्मक रूप से नहीं कहा? अगर आप ईमानदार हैं, तो जवाब होगा: हाँ, कहा है।
शायद क्रोध में, थकान में, या बिना सोच-समझे। आपने जानबूझकर नहीं कहा, फिर भी कह दिया। यही तो हमारी कमजोर मानवीय प्रकृति है।

“क्योंकि तुम्हें भी अपने मन में मालूम है कि तुमने भी कई
बार दूसरों को कोसा है।”
(सभोपदेशक 7:22)

जब हमें पता है कि हम भी दोषी हैं, तो हम दूसरों से पूर्णता की अपेक्षा क्यों करें?

अमाफ़ी ना देने का आत्मिक खतरा

दुर्भाग्य से कई विश्वासी ऐसी बातों को दिल में गहराई से बैठा लेते हैं। वे कड़वे हो जाते हैं, क्षमा नहीं कर पाते। उनकी प्रार्थनाएँ स्तुति से शिकायतों में बदल जाती हैं। उनका दिल कठोर हो जाता है, आनंद चला जाता है, और उनका विश्वास सूखने लगता है।

विडंबना यह है कि जिस व्यक्ति से वे नाराज़ हैं, वह या तो अनजान है या पहले ही पश्चाताप कर चुका है। लेकिन यह विश्वासी अब भी दर्द और घृणा में जकड़ा हुआ है।

छोड़ दो — अपनी आत्मा की भलाई के लिए

शत्रु (शैतान) हमारे टूटे हुए दिल और फूट में आनंदित होता है। जब हम बुरे शब्दों को पकड़कर बैठते हैं, तो हम अनजाने में शैतान के काम कर रहे होते हैं।

इसके बदले, शांति चुनो। अपने विश्वास के महत्वपूर्ण पहलुओं पर ध्यान दो — अनुग्रह, प्रेम और आत्मिक बढ़ोतरी।
क्षमा करो, जैसे मसीह ने तुम्हें क्षमा किया।

नीतिवचन 19:11
“समझदार व्यक्ति क्रोध में धीरे होता है; और उसका आदर इसी
में है कि वह अपराध को अनदेखा कर दे।”

इफिसियों 4:32
“एक-दूसरे के साथ दयालु और करुणाशील बनो, और जैसे मसीह ने तुम्हें क्षमा किया, वैसे ही एक-दूसरे को क्षमा करो।”

कोई भी पूर्ण नहीं है। अगर आप ऐसे मित्र, जीवनसाथी या कलीसिया सदस्य की तलाश कर रहे हैं जो आपको कभी दुख न दे — तो आप कभी नहीं पाएँगे।

प्रेम में चलना सीखो। क्षमा करना सीखो।

उद्धार के लिए अंतिम पुकार

मित्र, क्या आपने अपना जीवन यीशु मसीह को समर्पित किया है? बाइबल बताती है कि हम अंत के दिनों में जी रहे हैं। प्रभु शीघ्र लौटने वाला है।

मत्ती 24:33
“जब तुम इन सब बातों को देखोगे, तो जान लो कि वह निकट है, दरवाज़े पर खड़ा है।”

प्रकाशितवाक्य 22:12
“देखो, मैं शीघ्र आने वाला हूँ, और मेरे साथ प्रतिफल है, कि
हर किसी को उसके कामों के अनुसार दूँ।”

अगर आप ठंडे पड़ चुके हैं — चोट, कटुता या पाप में फँसे हैं — तो अब लौटने का समय है। उद्धार की शुरुआत पश्चाताप और यीशु को सच्चे दिल से समर्पण से होती है। वह आपको क्षमा, चंगाई और अनंत

जीवन देना चाहता है।

देरी न करें — यह आत्मिक युद्ध के घायल पल हैं।
राजा द्वार पर खड़ा है।

मरानाथा — प्रभु आ रहा है।

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:
WhatsApp